धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

अन्नपूर्णा योजना

7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी

आइये! आज के दिन को यादगार बनायें...
प्यार, प्रसन्नता, और प्रसाद बांटकर पुण्य प्राप्त करें।

चैत्र नवरात्रि एवं रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में,

प्रकाशन तिथि : 09 मार्च, 2026
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN/2001/03044 Regd.
Title Code : DELHIN09770

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

मार्च, 2026 | चैत्र/वैशाख | सं. 2082 | अंक 296 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 समाचार दर्शन

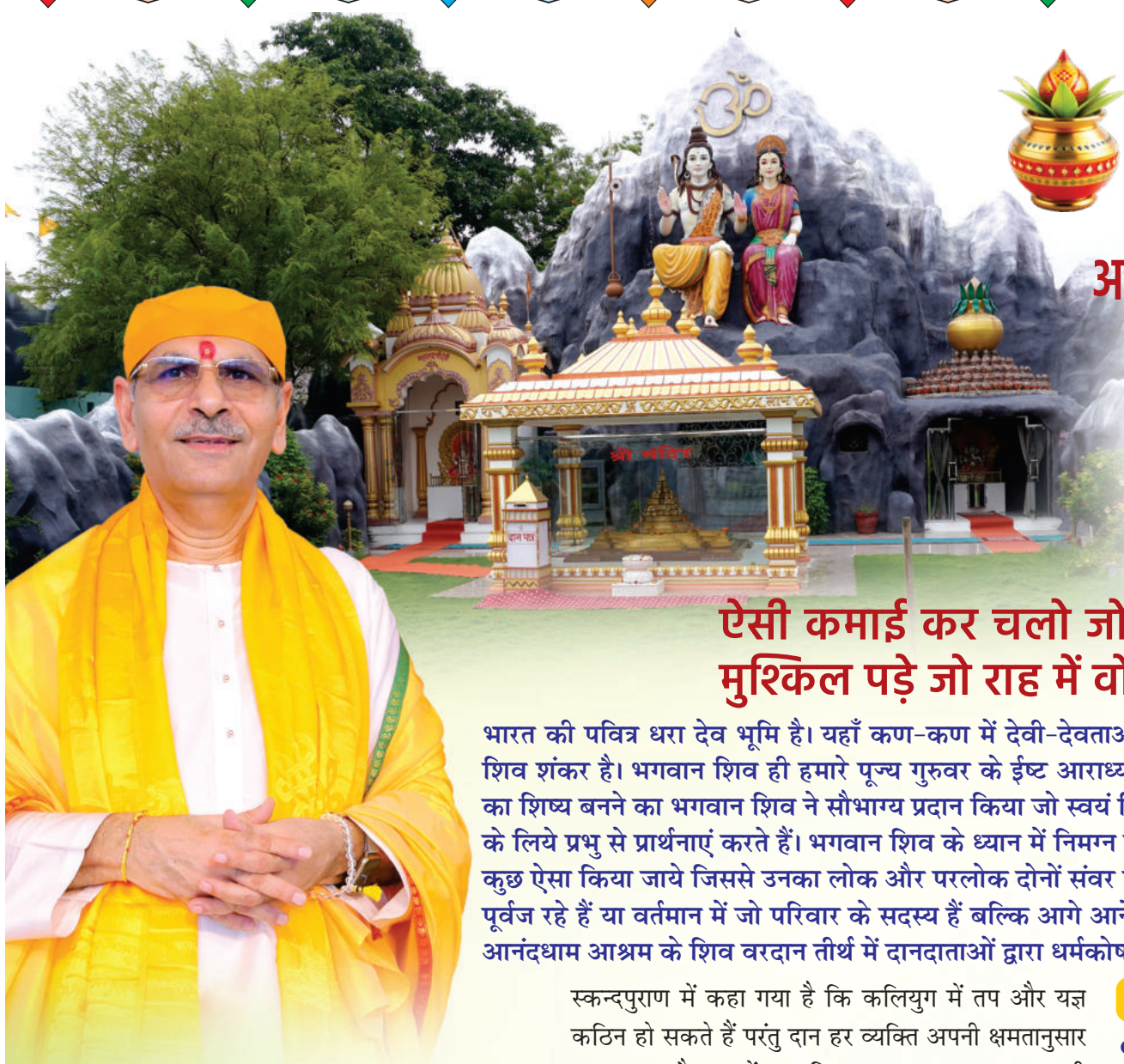

धर्मकोष

एक बार का दान

अनन्तकाल तक पुण्य का वरदान

ऐसी कमाई कर चलो जो साथ जा सके।
मुश्किल पड़े जो राह में वो काम आ सके।।

भारत की पवित्र धरा देव भूमि है। यहाँ कण-कण में देवी-देवताओं का वास हैं। कहा जाता है भारत का कंकर कंकर शिव शंकर है। भगवान शिव ही हमारे पूज्य गुरुवर के ईष्ट आराध्य हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे महान सद्गुरु जी का शिष्य बनने का भगवान शिव ने सौभाग्य प्रदान किया जो स्वयं शिव के समान दयालु हैं और सदैव शिष्यों के कल्याण के लिये प्रभु से प्रार्थनाएं करते हैं। भगवान शिव के ध्यान में निमग्न गुरुवर जी के मन में विचार आया कि शिष्यों के लिये कुछ ऐसा किया जाये जिससे उनका लोक और परलोक दोनों संवर जायें। साथ ही उनके न केवल पिछली वंशावली में जो पूर्वज रहे हैं या वर्तमान में जो परिवार के सदस्य हैं बल्कि आगे आने वाली पीढ़ियों का भी कल्याण हो जाये। इसके लिए आनंदधाम आश्रम के शिव वरदान तीर्थ में दानदाताओं द्वारा धर्मकोष स्थापित करवाया जाता है।

सनातन संस्कृति का प्राण है दान

सनातन संस्कृति में दान को अत्यंत पवित्र और पुण्यदायी माना गया है। दान केवल धन या वस्तु देने का नाम नहीं, अपितु यह हृदय की उदारता, करुणा और त्याग की भावना का प्रतीक है। दान सनातन धर्म का प्राण है। यह केवल वाह्य प्रक्रिया नहीं, अपितु आंतरिक साधना है। दान करने से व्यक्ति के हृदय का विस्तार होता है। जिससे समाज में प्रेम बढ़ता है और प्रभु की कृपा प्राप्त होती है। जब दान श्रद्धा, विनम्रता और निष्काम भाव से किया जाता है, तब वह साधारण कर्म न रहकर आध्यातिमक साधना बन जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य अनुसार दान अवश्य करना चाहिए। दान से धन घटता नहीं, अपितु पुण्य और सुख-शांति बढ़ती है तथा दान दाता की कीर्ति स्थिर दीपक की तरह समाज को प्रकाशित करती है। दान की वेद, पुराण, उपनिषद सभी प्रशंसा करते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है–**'शतहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर'** सौ हाथों से कमाओं और हजार हाथों से बांटो। अर्थात् धन कमाने का उद्देश्य केवल स्वार्थ नहीं अपितु परमार्थ है। तैतरीय उपनिषद् में गुरु शिष्य को उपदेश देता है–**'श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्'** अर्थात् श्रद्धा से दान करो, बिना श्रद्धा के नहीं। यहां भी दान की प्रधानता बताई गई है। स्कन्दपुराण में कहा गया है कि कलियुग में तप और यज्ञ कठिन हो सकते हैं परंतु दान हर व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार कर सकता है। भक्तों द्वारा दिया गया दान अक्षय पुण्यदायी हो इसके लिए मिशन ने धर्मकोष की विशेष व्यवस्था की है।

धर्मकोष क्या और क्यों

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गईं विभिन्न सेवाओं के लिये दान करता है, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार एक से चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जाता है और उस राशि से प्राप्त ब्याज और अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित होती है। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उसका पुण्यलाभ न केवल स्वयं अजीवन पाओ बल्कि आने वाली पीढ़ियां भी उसका पुण्यलाभ प्राप्त करें।

इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे शिव वरदान तीर्थ प्रांगण में शुभ मुहूर्तों में स्थापित किया जाता है।

पुण्य प्राप्ति भी और संस्था के उपहार भी

● संस्था की गोल्डन बुक में दानदाता का नाम स्वर्णाक्षरों से अंकित किया जाता है। ● इस दान से पारिवारिक जनों की जन्मकुण्डली में ग्रहों की अनुकूलता बढ़ती है। ● दानदाता के घर-परिवार, नौकरी-व्यापार में उन्नति प्रगति के लिये गुरुकुल के ऋषिकुमार आश्रम में करते हैं नित्य प्रार्थना ● गणेश-लक्ष्मी महायज्ञ में पूजित एवं प्राण प्रतिष्ठित सुमेरु श्रीयंत्र उपहार स्वरूप भेंट किया जाता है। ● स्वर्णाक्षरों में अंकित वंशावली का शिव वरदान तीर्थ में द्वादश ज्योतिर्लिंग के सान्निध्य एवं सामीप्य जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या परिवार के अन्य शुभमंगल अवसर पर संस्था भेजती है पूज्य महाराजश्री का शुभकामना संदेश।

आइये! एक बार दान देकर अनन्तकाल तक पुण्य के लिए स्थापित अक्षय धर्मकोष में सहभागी बनें। ईश्वर और गुरु कृपा से सुख-सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त करें, अक्षय पुण्य के सुअवसर से जुड़ें। धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3,
Nazafgarh Road, Nangloi, New Delhi - 110041

मानससेवा का पर्याय है विश्व जागृति मिशन

24 मार्च, 2026 मंगलवार को विश्व जागृति मिशन मानवसेवा की यात्रा के 35 वर्ष पूर्ण करेगा। 24 मार्च, 1991 रविवार को पूज्यश्री सुधांशु जी महाराज ने बी.पी. 77, पीतमपुरा, दिल्ली में कार्यकर्ताओं की सभा में विश्व जागृति मिशन की स्थापना की थी। मिशन का उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा–भारत में यात्रा करके देश की आर्थिक-सामाजिक स्थिति के साथ-साथ धार्मिक-आध्यात्मिक चिन्तन-पालन करने का भी मैंने अनुमान लगाया। देश में व्याप्त परिस्थितियों से मैं चिन्ता में हूं। हमने इन स्थितियों को बदलना है, सम्पूर्ण विश्व को जागृत करना है भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति, सनातन धर्म के मूल्यों के प्रति, देश के उज्जवल अतीत के प्रति और विश्व को अवगत करवाना है। प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों एवं ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान के प्रति। समाज में अशिक्षा, असमानता और भेदभाव को मिटाना है।

मिशन की स्थापना के बाद प्रारंभिक वर्षों में एक विशााल संस्थागत ढांचा तैयार किया गया। ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, आनंदधााम आश्रम, देश में 88 मण्डल, विदेशों में 10 शाखाएं, 36 आश्रम, 3 गुरुकुल, उपदेशक महाविद्यालय, गौशालाएं, वृद्धाश्रम, 24 भव्य मंदिर, साधना केन्द्र, देश-विदेश में 8000 से अधिक प्रवचन और गरीबों के लिए निःशुल्क अस्पताल, पब्लिक स्कूल, ज्ञानदीप विद्यालय, बालाश्रम, न जाने कितने सेवा के कार्य किये हैं मिशन ने मानव कल्याण के लिये।

रनवे पर सेवा यात्रा पूर्ण करने के साथ-साथ अब सनातन धर्म, संस्कृति और संस्कारों की उड़ान भरी है गुरुदेव जी महाराज ने। प्रयाग में फरवरी, 2025 में महाकुंभ में एक संकल्प किया, हम 10 और गुरुकुलों व 108 संस्कार केन्द्रों की स्थापना करेंगे। 35 संस्कार केन्द्रों की स्थापना हो चुकी है। गुरुकुलों की स्थापना की प्रक्रिया भी शीघ्र पूर्ण होगी। विराट सत्संगों में धर्म और संस्कृति का प्रचार निरन्तर किया जा रहा है। गुरुदेव जी महाराज ने तो अपना 70वां जन्मदिवस सनातन धर्म एवं संस्कृति को समर्पित कर दिया, भविष्य में धर्म और संस्कृति के ध्वज को विश्व में फहराना है, यही उनका संकल्प है। मानवसेवा की यात्रा सतत जारी रहेगी, यही है मिशन का उद्देश्य।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2026

12 से 15 मार्च	– सनातन संस्कृति जागरण अभियान, मेरठ, उत्तर प्रदेश
26 मार्च	– राम नवमी एवं मिशन स्थापना दिवस आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
27 से 29 मार्च	– नासिक, महाराष्ट्र
02 अप्रैल	– पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
02 से 05 अप्रैल	– पानीपत, हरियाणा
09 से 12 अप्रैल	– बैतूल, मध्य प्रदेश
14 से 17 अप्रैल	– शिमला, हिमाचल प्रदेश
01 मई	– पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
02 मई	– उल्लास पर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 से 10 मई	– कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

ध्यान शिविर-मनाली (हिमाचल प्रदेश)

12 से 26 मई	– अर्ध चांद्रायण तप साधना
27 मई से 10 जून	– चान्द्रायण तप साधना (एडवांस कोर्स)
12 मई से 10 जून	– पूर्ण चान्द्रायण तप साधना
12 से 16 मई	– प्रथम पांच दिवसीय ध्यान शिविर
18 से 22 मई	– द्वितीय पांच दिवसीय ध्यान शिविर
31 मई	– पूर्णिमा दर्शन, मनाली, हिमाचल प्रदेश
11 से 14 जून	– सुंदर नगर, हिमाचल प्रदेश
21 जून	– अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

सद्गुरुदेव उवाच

चिन्ता नहीं चिंतन का सिद्धान्त अपनायें

चिन्ता को चिता के समान कहा गया है। जो व्यक्ति चिन्ता में पड़ा रहता है उसे यह इस तरह चट कर लेती है, जैसे मजबूत लकड़ी को दीमक खा जाती है। जबकि जो चिन्ता न करके हरि चिन्तन करता है उसकी चिन्ता स्वयं प्रभु करते हैं।

प्रभु सदैव हमारे अंग-संग रहता है, कण-कण में वह व्यापक है, उसके इशारे के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, वह सर्व शक्तिमान है, उसे किसी भी कार्य में सहायक की जरूरत नहीं पड़ती, वह सत् चित् आनन्द स्वरूप है, वह दयालु है, परम कृपालु है, सबके ऊपर कृपा करता है, जब सारे रिश्ते-नाते, सगे-सम्बन्धी, मित्र-सखा साथी मुंह फेर लेते हैं, सारे संसार के दरवाजे बन्द हो जाते हैं तब भी उसका द्वार खुला रहता है, अपनी संतान के लिए। दुःख वाली जगह पर, चोट वाली जगह पर हमारा अपना हाथ बाद में पहुंचता है, प्रभु का दया भरा हाथ पहले पहुंच जाता है। फिर हम क्यों उसका चिंतन नहीं करते? उसकी कृपाओं को याद नहीं करते? उसके धन्यवाद के गीत नहीं गाते, उसके प्रति प्रेम भाव अर्पित नहीं करते, उसके चरणों में सिर नहीं झुकाते। हम अपनी वाणी से यह क्यों नहीं कहते कि अब सौंप दिया इस जीवन का सब भर तुम्हारे चरणों में अटल सच्चाई को हम क्यों नहीं स्वीकारते? हरि चिन्तन में अपना मन लगाएं, चिन्ता रूपी दीमक को दूर भगाएं। ●

परमात्मा सबसे खरे और सच्चे सखा हैं, और परमात्मा का बोध करवाते हैं सद्गुरु ही सच्चे और पक्के मार्गदर्शक हैं, कभी आपने सोचा है, यदि गुरु न होते हमारे साथ, तो कौन पकड़ता हमारा हाथ, गुरु को न मानने वाले कुछ लोग अपने अहंकार में कहा करते हैं, हम सीधे भगवान से प्रार्थना कर लेते हैं, गुरुवाला काम तो हम खुद ही कर लेते हैं, ऐसे लोग भूल जाते हैं, गुरु हर समय हमें सचेत करते हैं, भगवान के प्रति विश्वास पैदा करते हैं, मन मे उसकी अलख जगाते हैं, हमें धर्म से जोड़ते हैं, गुरु से जो नहीं जुड़ते, वह तो क्रोध की अग्नि में रोज भस्म होते हैं, घृणा, ईर्ष्या से शत्रु पैदा करते हैं, अहंकार से उदण्ड पाप करते हैं, मोह-लोभ के जाल में चक्कर काटते रहते हैं। यह बात पक्की मान लो कि वे अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये जीते हैं। जो हमारे हिस्से में है वह अवश्य मिलेगा, उसे कोई ले नहीं सकता, उससे ज्यादा कोई दे नहीं सकता। इसिलए प्रभु की देन को बाँटना सीखो। प्रभु की देन पाकर वाह-वाह करना सीखो, हाय-हाय नहीं। परमात्मा केवल हृदय की भाषा जानता है और हर किसी के हृदय में उसका वास है, उसे पाने के लिए उससे दिल से रिश्ता जोड़ो, उसे हृदय से पुकारो वह आपके हृदय की पुकार सुनेगा और आपको अपना बना लेगा। ●

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

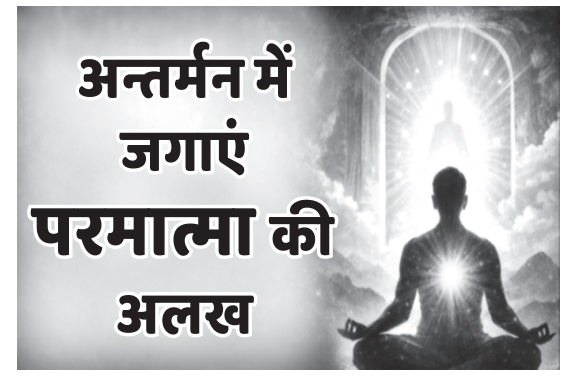

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DD NATIONAL
दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्
प्रतिदिन प्रातः 7:00 से
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार
सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रातः 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747

www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

Jaago with Sudhanshu ji Maharaj

प्रिय आत्मन्!

हमेशा उत्साहित रहें। हर क्षण ऊर्जा से भरे रहें। आत्मशोधन भी करें और आत्मचिंतन भी करें। जीवन यात्रा कहां से शुरू हुई कहां पहुंची, जीवन का लक्ष्य क्या है? जीवन को व्यवस्थित करने के लिए योजना बनाएं प्रात:काल प्रत्येक दिन की। महीने की पहली तारीख को पूरे महीने की। जन्मदिन पर वर्ष भर की योजना बनाएं। योजना बनाकर कर्म करेंगे तो आप हर जगह सफल होंगे। अपने लिए कुछ नवीन संकल्प करें। कुछ नियम अपनाएं। विचार करें कि आप क्या छोड़ेंगे और क्या जीवन में नया जोड़ेंगे। जिंदगी में हंसने-बोलने गुनगुनाने के लिए अपनों की आवश्यकता होती है। इसलिए अपने रिश्तों में प्रेम रखें। गलतफहमी दूर नहीं करने से वह ईर्ष्या में बदल जाती है। इसलिए जितनी जल्द हो गलतफहमी दूर करें। अहंकार दिखाकर किसी रिश्ते को तोड़ने से अच्छा है माफी मांगकर रिश्ते को बचा लिया जाए। रिश्ते कीमती हैं इन्हें सम्भालकर रखें। इनके खो जाने पर उनकी कीमत का एहसास होता है। भगवान राम हमारी संस्कृति के आदर्श हैं, उन्होंने हर स्थिति में रिश्तों को संभाला, स्वयं कष्ट सहे पर रिश्तों में खटास नहीं आने दी। भगवान करे आप सभी आप सभी का जीवन नियमित अनुशासित और व्यवस्थित हो, आप सभी स्वयं को भी महत्व दें और अपने रिश्ते-नातों को भी महत्व दें।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

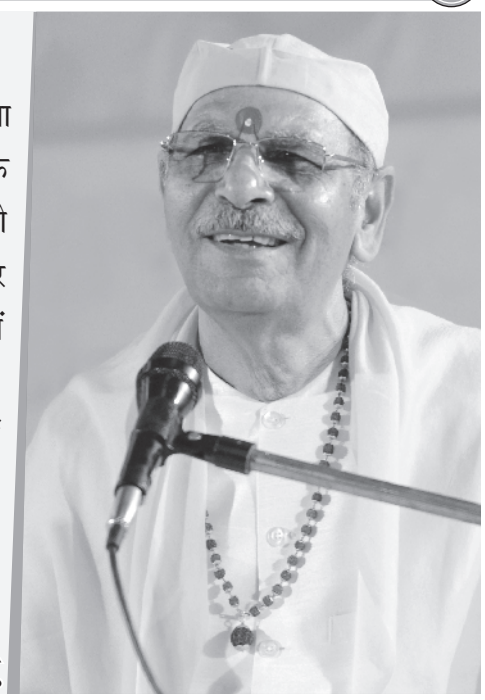

गुरु महाराज का अमृत सन्देश

- अपने द्वारा अपना उद्धार कीजिए, स्वयं का पतन न होने दें क्योंकि आप ही अपने मित्र हैं और आप ही शत्रु। जिसने स्वयं को संभाल लिया, खुद को जीत लिया, वह स्वयं का मित्र है। जो ऐसा नहीं कर पाया वह स्वयं का शत्रु है।
- मनुष्य जीवन अनमोल है, आवागमन के अनेक चक्र पार कर आपको यह श्रेष्ठ जीवन मिला है, इसे मूल्यवान बनाये रखें।
- अपने शरीर की देखभाल करें, योग प्राणायाम करें, उचित आहार और अच्छी नींद भी लें। यही देह है जिसमें आपने जीवन भर रहना है।
- याद रखें ये दिन दोबारा नहीं आयेगा। जीभर के जिंदगी जीओ, चिंता करने से भविष्य नहीं बदल जायेगा।
- स्वस्थ रहें मस्त रहें व्यस्त भी रहें परंतु जीवन को अस्त-व्यस्त न रखें। दिल अपना हो या पराया, इसे दु:खाना नहीं चाहिए। चिंता निराशा छोड़िये।
- जीवन में चिंता है तो चिंतन करो, यदि व्यथित हों तो व्यवस्थित होइये। जीवन से भागना ठीक नहीं जीवन के प्रति जागना जरूरी है।
- हमारे जीवन को आदतें चलाती हैं। अच्छी बुरी आदतें जीवन को मुश्किल में डालती हैं और अच्छी आदतें जीवन को आसान बनाती हैं।

- मन की शक्ति उसके शांत होने पर होती है। मन जहां लग जायेगा वहीं चमत्कार हो जायेगा। ध्यान द्वारा मन को शांत शक्तिवान करना सीखिए।
- अपने काम में अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए तो आप श्रेष्ठता की सीढ़ियां चढ़ते जायेंगे।
- सोचते रहना और करना नहीं यह भी बुरा है, बिना सोचे करते जाना यह और भी बुरा है।

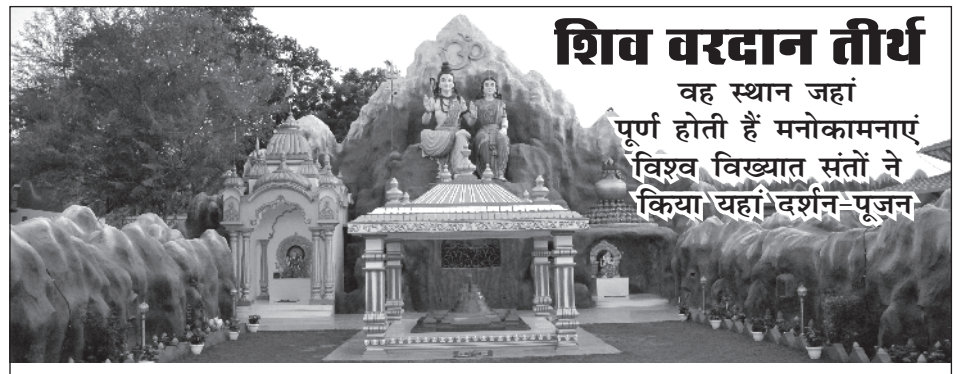

शिव वरदान तीर्थ

वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन

आनन्दधाम आश्रम की ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश-विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु सन्यासी एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

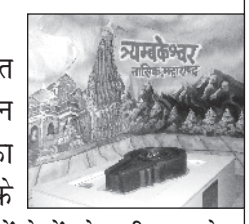

शिव वरदान तीर्थ के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण ज्योतिर्लिंग है **'त्र्यंबकेश्वर'** ज्योतिर्लिंग। यहां भगवान शिव 'त्र्यम्बकेश्वर' के रूप में विराजमान हैं। 'त्र्यम्बक' शब्द का अर्थ है-तीन नेत्र वाले नित्रेत्रधारी भगवान शिव। इस ज्योतिर्लिंग के गर्भगृह में तीन छोटे-छोटे लिंग हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवों के प्रतीक माने जाते हैं। त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने से विशेष रूप से पितरों की कृपा और भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। यह ज्योतिर्लिंग, कालसर्प दोष, पितृदोष और नारायण नागबली पूजा के लिए विशेष है। सच्ची भक्ति और जप-तप से यहां दर्शन-पूजन करने से मनुष्य के जीवन के सभी दोष दूर होता है। यह ज्योतिर्लिंग वृश्चिक राशि वालों के लिये विशेष शुभ फलदायी है। चूंकि वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है। मंगल साहस, ऊर्जा और संघर्ष का प्रतीक है। जब मंगल अशांत या पीड़ित हो तो जीवन में क्रोध, मानसिक तनाव, दुर्घटना, विवाह और बाधाएं बढ़ जाती हैं। त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन, पूजन और रुद्राभिषेक करने से मंगल दोष शांत होता है और जीवन में संतुलन आता है। मानसिक तनाव में कमी, शुत्रु बाधा से मुक्ति, पितृकृपा प्राप्ति, साहस और आत्मविश्वास में वृद्धि तथा विवाह व संतान प्राप्ति के लिए शिव वरदान तीर्थ स्थित त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के पूजन, दर्शन, रुद्राभिषेक अवश्य करें। ●

परोपकार ही जीवन का सार

एक व्यक्ति ने किसी संत से पूछा 'जीवन को सुंदर बनाने की इच्छा है। इसलिए मुझे कोई ऐसा उपदेश दीजिए जिससे जीवन को मैं अच्छा बना सकूं।' संत ने अपने पास रखी हुई तीन चीजें उठाकर उस व्यक्ति को दे दी। थोड़ी सी रूई, एक मोमबत्ती और एक सुई। तीनों चीजें हाथ में देने के बाद संत ने कहा 'बस हो गया हमारा उपदेश, अब जाओ। 'वह आदमी वहां से चल पड़ा पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि फकीर संत ने ये चीजें क्यों दी हैं। वह व्यक्ति वापस फकीर संत के पास आकर बोला 'महाराज यह जो कुछ आपने दिया है, यह मेरी समझ में नही आ रहा है। संत ने कहा यह जो रूई दी है, इसकी एक खासियत है कि यह धागा बनकर हर एक की लाज ढकती है। मेरे परमात्मा का प्यारा इंसान भी वही है जो दूसरों की लाज ढका करता है और दूसरों को सरंक्षण देता है और यह मोमबत्ती, मोम बनकर जलती जरूर है लेकिन प्रकाश बनकर अंधेरा दूर करती है। दूसरों को रास्ता दिखाती है। तुम भी इसी रूप को धारण करो। सदैव दूसरों के लिए प्रकाश बनकर रहना। तीसरी चीज तुमको दी है 'सूई'। सूई के बिना संसार का काम नहीं चलता। टुकड़ों को, फटे हुओं को, कटे हुओं को जोड़ने का काम सूई ही करती है। सूई के बिना कोई जुड़ा नहीं करता। तो दुनिया में भी परमात्मा का प्यारा वही है जो फटे हुए दिलों को सिला करता है, जो टूटे दिलों को जोड़ा करता है, बिखरे हुओं को जो इकट्ठा करता है। यही मेरा उपदेश है। ●

आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली में शिवरात्रि मंगल महोत्सव सम्पन्न

भगवान शिव का समन्वित और संतुलित रूप ही है सनातन धर्म का स्वरूप - सुधांशु जी महाराज

आनन्दधाम, नई दिल्ली, 14 एवं 15 फरवरी, 2026, पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी एवं पूज्या गुरु माँ के पावन सान्निध्य में महाशिवरात्रि पर सम्पन्न सवालाख पार्थिव शिवलिंग पूजन, चतुर्प्रहर शिव रुद्राभिषेक, महाआरती शिव ध्यान में भक्तों ने श्रद्धा-भक्ति पूर्वक सहभागिता की और पर्वोत्सव का अनुभूतिक आनन्द प्राप्त किया। शिव वरदान तीर्थ क्षेत्र एवं पशुपतिनाथ शिवालय के विराट परिसर में तैयार 51 कुण्डीय यज्ञशाला में गुरुवर के साथ यज्ञाहुतियां

डालते यजमान एवं गुरु मार्गदर्शन में सवालाख पार्थिव पूजन करते हजारों भक्तों से सम्पूर्ण आनंदधाम तीर्थ परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा तरंगों से आह्लादित हो रहा था।

14 फरवरी को प्रात: एवं सायं दोनों समय पूज्य गुरुदेव व डॉ. दीदी के मार्गदर्शन में आयोजित 'महाशिव ध्यान' का बड़ी संख्या में संकल्पित भक्तों ने आनन्द लिया। वहीं अगले दिन शिंवरात्रि पर्व के दिन रथ पर सवार गुरुवर के साथ शोभा यात्रा में बक्करवाला मोड़ से आश्रम तक नाचते-गाते भक्त एवं पीत वस्त्र के साथ मंगल कलशधारी सौभाग्यवती महिलायें आदिगुरु भगवान शिव एवं सद्गुरु दोनों की कृपा-आशीर्वाद के साथ गुरु निर्देशित मार्ग पर आह्लादित होकर बढ़ रही थीं। इस प्रकार 'रुद्राभिषेक व महारुद्र यज्ञ', शिव भजन संध्या के साथ इस महाशिवरात्रि महोत्सव को शिव ध्यान साधना महोत्सव बनाने में भक्तगण सफल रहे। गुरुवर की अमृतवाणीमय सत्संग सहित महाशिवरात्रि

के सम्पूर्ण कार्यक्रम को श्रद्धालुओं के लिए ऑनलाइन-ऑफलाइन दोनों विधियों से सम्पन्न कराया गया।

आनन्दधाम परिसर में महाशिवरात्रि पर्व मनाने में स्थानीय निकटवर्ती कालोनियों, सोसाइटी आदि के लोग भी पीछे नहीं रहे। तभी तो 15 फरवरी को महाशिवरात्रि पर भगवान पशुपतिनाथ शिवालय पर प्रात: से शिव जलाभिषेक के लिए परिसर से बाहर सड़क तक शिव भक्तों की लम्बी कतारें देखने को मिलीं। दोपहर बाद तक यह क्रम चलता रहा। ज्ञातव्य कि महाशिवरात्रि पर्व पर पूजन में सम्मिलित सम्पूर्ण पार्थिव शिवलिंगों का निर्माण पर्व के 15 दिन पूर्व से गुरुवर के मार्गदर्शन में गुरुकुल एवं उपदेशक महाविद्यालय के आचार्यों, ऋषिकुमारों, मण्डल से पधारे भक्तों व आश्रमवासियों द्वारा किया गया।

देश भर से पधारे हजारों संकल्पित साधकों ने प्रात: व सायं दो सत्रों में गुरुवर एवं डॉ. दीदी के सानिध्य में ध्यान साधना पूर्ण की। अगले दिन प्रात: पूज्य गुरुदेव शिव रुद्राभिषेक पूर्ण करने के साथ रथ पर आरूढ़ होकर शोभयात्रा में सहभागिता की।

इस दौरान बक्करवाला मोड़ से आश्रम के शिव वरदान तीर्थ तक निकाली गयी भव्य शोभायात्रा भक्तों को आह्लादित करने वाली थी। इस यात्रा में पूज्य गुरुदेव एवं डॉ. दीदी सजाये गये दिव्य रथ पर विराजमान थे, साथ में नाचते-गाते हजारों भक्तगण, श्रद्धालु एवं मंगल कलश सिर धारण किये मांगलिक बहनें यात्रा को गौरव से पूर्ण कर रही थीं। शोभायात्रा के शिव वरदान तीर्थ पहुचने पर विशेष पूजन का क्रम चला, तत्पश्चात भक्तों ने शिव भजन, गुरु संदेश का श्रवण किया। इस अवसर पर हरियाणवी, हिमाचली से लेकर अनेक प्रकार की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों पर भक्तगण थिरकते रहे। इसके साथ ही अपने गुरुवर, गुरुमाँ, डॉ. दीदी जी के साथ 1008 दीपों से कैलाश मानसरोवर पर भगवान शिव की महाआरती सम्पन्न की गयी।

इसी क्रम में सायंकालीन मुख्य सत्संग एवं शिव भजन संध्या में गुरुवर ने विश्व के करोड़ों भक्तों के मंगल कल्याण की कामना की और श्रद्धालुओं से खचाखच भरे परिसर में भक्तों को अपनी अमृतवाणी से आशीषित किया। तत्पश्चात शिव वरदान तीर्थ पर भगवान पशुपति नाथ, 12 ज्योतिर्लिंगों की आरती के साथ सत्संग कार्यक्रम पूर्ण हुआ। इसके बाद रात्रि 01 बजे तक चले रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भारी संख्या में भक्तों ने आनन्द लिया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहभागीदार रहे आम श्रद्धालुओं को गुरु अभिमंत्रित रुद्राक्ष आशीर्वाद स्वरूप प्रदान किया गया।

पूज्य गुरुदेव ने भक्तों को महा शिवरात्रि पर अपना आशीर्वाद देते हुए जीवन के शिखर रोहण के लिए भावों एवं विचारों के समन्वय पर जोर दिया। पूज्यवर ने कहा भावनात्मक और विचार परक मस्तिष्क दोनों शिव और शक्ति के दो रूप हैं, इन दोनों के समन्वय एवं संतुलन से जीवन को सही दिशा धारा मिलती है।

शेष भाग पृष्ठ 5 पर...

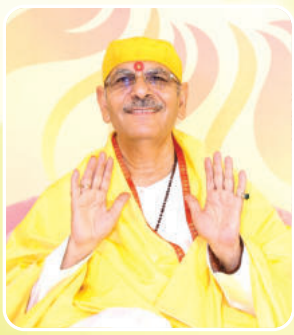

गुरुवर में है भगवान राम जैसा समर्पण का भाव

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी।। (रामचरितमानस)

जिस राजा के राज में प्रजा दुखी रहती है, वह नरकगामी होता है, इसलिए प्रजा के सुख के लिए राजा को अपने सुखों का समर्पण करना पड़े तो अवश्य कर देना चाहिए।

जिस कार्य से किसी को सुख मिले उसका नाम है सेवा और सेवा का जन्म जिस भाव से होता है उसे कहते हैं समर्पण। सनातन संस्कृति में समर्पण का सर्वोच्च आदर्श यदि किसी व्यक्तित्व में साकार होता है तो वे हैं भगवान श्री राम। वे केवल एक राजा या अवतार ही नहीं अपितु मर्यादा, धर्म और समर्पण के जीवंत प्रतीक हैं। भगवान राम का जीवन त्याग, सत्य, कर्तव्य और आदर्शों की ऐसी गाथा है, जो मानव जीवन को दिशा देती है।

भगवान राम का समर्पण केवल परिवार तक ही सीमित नहीं था, अपितु प्रजा के प्रति उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। वनवास से अयोध्या लौटने के बाद उन्होंने रामराज्य की स्थापना की, जो न्याय, समानता और सुख-शांति का प्रतीक बना। प्रभु श्री राम ने सदैव प्रजा की भावनाओं का सम्मान किया। जब राज्य में रह रहे एक व्यक्ति के कथन से प्रजा में संदेह उत्पन्न हुआ, तब उन्होंने व्यक्तिगत सुख से ऊपर उठकर राज्य की मर्यादा को प्राथमिकता दी। उस समय पूर्णत: पवित्र माता सीता का त्याग उनके जीवन का अत्यंत वेदनापूर्ण निर्णय था, परंतु यह निर्णय उन्होंने प्रजा के हित में लिया। प्रजा के लिये उनके द्वारा लिया गया यह निर्णय समर्पण का सर्वोच्च उदाहरण है, जब उन्होंने अपने निजी जीवन का बलिदान भी धर्म और कर्तव्य के लिए कर दिया। आज के समय में जब स्वार्थ अहंकार और व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता दी जाती है, तब प्रभु श्री राम का समर्पण हमें त्याग, कर्तव्य और नैतिकता की याद दिलाता है। उनका जीवन बताता है कि सच्चा सुख बाहरी वैभव में नहीं अपितु धर्म और सत्य के पालन में है।

भगवान श्रीराम की तरह ही हमारे गुरुवर पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज त्याग और समर्पण के आदर्श हैं। एक सम्भ्रांत और सम्पन्न परिवार में जन्म लेने के उपरांत भी अपने परिवार की परम्परा का पालन करते हुए कि घर की पहली संतान धर्म के लिए समर्पित होगी तो गुरुवर ने अपने पिता के प्रति समर्पण भाव दिखाते हुए धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत अपना सम्पूर्ण जीवन सनातन धर्म के लिए समर्पित कर दिया। पचास वर्ष से अधिक समय से आप धर्म, संस्कृति और सनातन जागृति के लिए देश से लेकर विदेश तक सत्संग प्रवचन कर रहे हैं, सनातन जागरण अभियान चला रहे हैं। आपने अपनी सुख-सुविधाएं नहीं देखी आपका जीवन समाज के लिए समर्पित रहा। धर्म संस्कृति के प्रेमी बच्चों के लिए आपने गुरुकुल बनवाए, अनाथ बच्चों के लिए अनाथालय खोले, आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी पब्लिक स्कूल, कूड़ा बीनकर गुजारा करने वाले बच्चे-बच्चियों के लिए ज्ञानदीप विद्यालय, गरीब रोगियों के लिए धर्मार्थ अस्पताल, आनंदधाम कौशल विकास केन्द्र आदि अनेक सेवाएं चला रहे हैं।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी., सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से या सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों से जुड़ने के लिए धर्मदूत के पेज नम्बर-2 पर दिये गये सम्पर्क सूत्रों से जुड़ें। आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

शिवरात्रि महोत्सव का शेष भाग

शिव और शक्ति दोनों मिलकर इस सृष्टि का संचालन करते हैं, इसीलिए वे अर्ध नारीश्वर कहलाते हैं। ईड़ा व पिंगला दोनों नाड़ियां शरीर के संचालन में मदद करती हैं, पर जब इन दोनों के श्वर सम हो उठते हैं, तो जीवन में कमाल हो जाता है, यही अवस्था है जीवन में शिवत्व के जागृत होने की। जीवन में यह समता व संतुलन आने पर भाग्य खिलता है। पूज्यवर ने कहा भगवान शिव का यह संतुलन वाला रूप ही सनातन है, यह सनातन बचेगा, तभी धर्म बच सकेगा।

शिव रात्रि कार्यक्रम पर अपनी शुभकामनायें देते हुए ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने कहा-हमें बुराइयों को छोड़कर आनंद अवस्था की ओर जाने की जरूरत है, शिवरात्रि इसी संकल्प के प्रति समर्पित है। दीदी ने कहा भगवान शिव औढरदानी और सर्व के कल्याणकरी देव हैं, इसलिए अंदर से हम सभी देने वाले बनें। जिससे भगवान शिव की दिव्य ऊर्जा को आत्मसात करने के हम सहज अधिकारी बन सकें। आप सभी साधक नियमित साधना करने वाले बनें, सात्विक बुद्धि वाले बने, जीवन में पवित्रता आत्मसात करने वाले बनें, ताकि जीवन को नियमित जप, ध्यान आदि के अभ्यास के द्वारा शिवमय बना सकें। ●

अलीगढ़ में एक दिवसीय सत्संग सम्पन्न

गीता के अमृत संदेश को अपनाएं, सदैव कर्मरत रहें -सुधांशु जी महाराज

अलीगढ़, उत्तर प्रदेश। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में 8 फरवरी, 2026 कोणार्क फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'जीवन जीने की कला' विषय पर अलीगढ़ के श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल भगत जी अर्थात अलीगढ़ के डीएस कॉलेज आडिटोरियम में यह एक दिवसीय सत्संग आयोजित किया गया। गुरुवर का यह प्रथम अलीगढ़ प्रवास था, जहां श्री अनमोल रतन जी ने संस्था की ओर से पूज्य महाराजश्री का भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया। पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज ने सत्संग में उपस्थित भक्तों को जीवन के अंतिम चरण तक स्वयं को कर्मशील बनाएं रखने और दूसरों के सामने कभी हाथ फैलाने की नौबत न आने देने का संकल्प दिलाया। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता में दिए गए अमृत सन्देश के महत्व पर भी प्रकाश डालते हुए कहा जो व्यक्ति किसी से द्वेष नहीं रखता, सभी के प्रति मैत्री और करुणा रखता है, अहंकार और ममता से रहित होकर सुख-दु:ख में सम रहता है। जो क्षमाशील है, संतुष्ट है। मन और इन्द्रियों को वश में रखकर दृढ़ निश्चय के साथ भक्ति करता है वह भगवान को अतिशय प्रिय है। ●

“धर्मादा” अपनी कमाई में बरकत के लिए धार्मिक कार्यों में दान करें

‘धर्मो रक्षति रक्षितः’ धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धार्मिक कार्यों से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है–‘धर्मो रक्षति रक्षितः’ जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

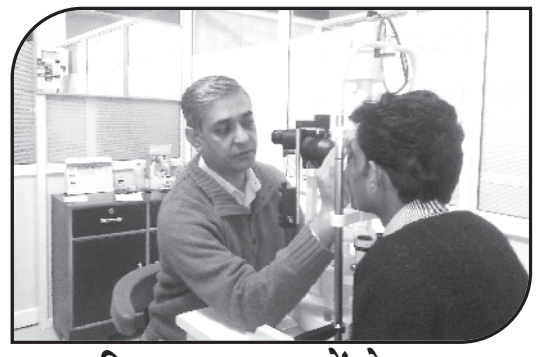

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

सेहत के लिए वरदान से कम नहीं आंवला जूस

आंवला अमृत के समान गुणकारी है। आयुर्वेद के अनुसार, आंवले का जूस शरीर की सभी प्रक्रियाओं को संतुलित करने के साथ ही त्रिदोष यानी वात, कफ, पित्त को खत्म करता है। आंवले में ऐसे तत्व भी पाए जाते हैं जो कैंसर सेल्स से लड़ने का काम करते हैं।

» मुंह में छाले होने पर आंवले के रस का सेवन फायदेमंद रहता है। आंवले को एक कारगर घरेलू उपाय की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। मुंह के छालों से छुटकारा पाने के लिए 2 चम्मच आंवले के जूस को पानी में मिलाकर उससे गरारे करें।

» नियमित रूप से आंवले का जूस पीने से कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होता है और शरीर सेहतमंद रहता है। इसमें पाया जाने वाला एमिनो एसिड और एंटीऑक्सीडेंट की वजह से दिल सुचारू रूप से काम करता है।

» आंवले का रस सांस की बीमारियों जैसे अस्थमा आदि को सही रखने में मदद करता है।

» आंवला का रस लीवर को सुरक्षा प्रदान करता है। ये शरीर से सारे विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।

» आंवले में विटामिन सी के अलावा आयरन, कैल्शियम और फास्फोरस भी काफी मात्रा में पाया जाता है और इसे एक न्यूट्रिशन ड्रिंक की तरह भी रोज पीया जा सकता है।

» बालों के लिए आंवला एक दवा की तरह काम करता है। बालों को काला, घना और चमकदार बनाने के लिए आंवले का प्रयोग होता है। आंवले में पाया जाने वाला अमीनो एसिड और प्रोटीन बालों को बढ़ाता है। इसे झड़ने से रोकता है और मजबूती प्रदान करता है।

» डायबिटीज के मरीजों के लिए आंवला बहुत काम की चीज है। डायबिटीज पीड़ित व्यक्ति अगर आंवले के रस का प्रतिदिन शहद के साथ सेवन करे तो बीमारी से राहत मिलती है।

» एसिडिटी में आंवले का पाउडर, चीनी के साथ मिलाकर खाने या पानी में डालकर पीने से राहत मिलती है। इसके अलावा आंवले का जूस पीने से पेट की सारी समस्याओं से निजात मिलती है।

» पथरी की समस्या में भी आंवला कारगर उपाय साबित होता है। पथरी होने पर 40 दिन तक आंवले को सुखाकर उसका पाउडर बना लें और उस पाउडर को प्रतिदिन मूली के रस में मिलाकर खाएं। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में पथरी गल जाएगी।

» रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी होने पर रोजाना आंवले के रस का सेवन करना फायदेमंद साबित होता है। यह शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है और खून की कमी नहीं होने देता।

» आंखों के लिए आंवला अमृत समान है, इसका नियमित सेवन आंखों की रौशनी को बढ़ाने में सहायक होता है। इसके लिए रोजाना एक चम्मच आंवला पाउडर को शहद के साथ लेने से लाभ मिलता है और मोतियाबिंद की समस्या से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

» आंवला जूस स्किन ट्रीटमेंट के काम भी आता है। आंवले के रस को रूई में भिगोकर लगाने से त्वचा साफ, चमकदार होती है और झुर्रियां भी कम हो जाती हैं।

» याददाश्त बढ़ाने में आंवला काफी फायदेमंद होता है। इसके लिए सुबह के समय आंवला का मुरब्बा गाय के दूध के साथ लेने से लाभ होता है। इसके अलावा आप प्रतिदिन आंवले के रस का प्रयोग भी कर सकते हैं। ●

सनातन संस्कृति के पंच स्तम्भ - गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गुरु

सनातन संस्कृति केवल श्रद्धा-आस्था की पद्धति नहीं अपितु जीवन जीने की एक दिव्य, संतुलित और समन्वित शैली है। इसमें प्रकृति, प्राणी, ज्ञान साधना और मार्गदर्शन सभी को समान महत्व दिया गया है। इसी समन्वित दृष्टि के कारण गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गुरु को सनातन संस्कृति के पांच प्रमुख स्तंभ माना गया है। ये पांचों स्तम्भ मनुष्य के भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन को पवित्र और संतुलित बनाते हैं।

सनातन संस्कृति में गौ को माता कहा गया है। यह केवल भावनात्मक उद्बोधन नहीं अपितु जीवन की उपयोगिता पर आधारित सत्य है। गाय का दूध, दही, घी, गौमूत्र और गोबर ये सभी पंचगव्य आयुर्वेद कृषि और यज्ञीय परम्पराओं में अत्यंत उपयोगी हैं। गौ ग्राम्य जीवन की धुरी रही है। खेतों की उर्वरता, शुद्ध आहार और प्राकृतिक चिकित्सा इन सबका आधार गौ रही है। शास्त्रों में कहा गया है कि जहां गौ की रक्षा होती है, वहां धर्म, समृद्धि और शांति का वास होता है।

सनातन संस्कृति में गंगा केवल एक नदी नहीं, अपितु श्रद्धा-आस्था और शुद्धि की जीवंत धारा है। हिमालय से निकलकर भारत भूमि को हरा-भरा करती हुई गंगा करोड़ों लोगों की जीवन रेखा है।

गंगा स्नान से जहां पाप क्षीण होते हैं वहीं तन-मन की शुद्धि भी होती है। अमृत तुल्य गंगा जल सैकड़ों वर्षों तक खराब नहीं होता है।

सनातन संस्कृति का दार्शनिक एवं आध्यात्मिक सार है गीता। कुरुक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया यह उपदेश आज भी मानव जीवन का प्रकाश स्तंभ है। गीता कहती है कि मनुष्य को फल की चिंता छोड़कर धर्मसम्मत कर्म करते रहना चाहिए। यह ग्रंथ निराशा में आशा, भ्रम में स्पष्टता और भय में साहस प्रदान करता है। गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं अपितु जीवन प्रबंधन का शाश्वत विज्ञान है।

सनातन संस्कृति में सूर्य रूपी परम प्रकाश से सुबुद्धि के जागरण की प्रार्थना है-गायत्री। गायत्री साधना मन बुद्धि और आत्मा को शुद्ध करती है। गायत्री मंत्र के नियमित जप से विचारों में पवित्रता, निर्णयों में स्पष्टता और जीवन में सकारात्मकता आती है। गायत्री हमें अंधकार से प्रकाश की ओर और अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है।

सनातन संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा है। गुरु केवल दीक्षा मंत्र नहीं देता, अपितु जीवन को दिशा देने वाला महान मार्गदर्शक होता है। गुरु हमें अनुशासन, विवेक ओर आत्मबोध का मार्ग दिखाता है। गुरु परम्परा के कारण ही वेद, उपनिषद्, योग और ध्यान की परम्पराएं आज तक सुरक्षित है।

जब व्यक्ति सनातन संस्कृति के इन पांच सिद्धांतों को जीवन में अपनाता है तब उसका जीवन केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहता, अपितु समाज और सृष्टि के कल्याण से जुड़ जाता है और इसी से 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का महाभाव साकार होता है। ●

अपनायें संस्कृति संस्कार - पायें गुरुवर का प्यार

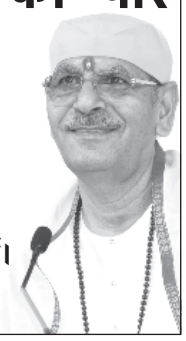

- विश्व जागृति का अभियान, सारी धरा का हो कल्याण।
- जब होगा मानव निर्माण, धरा बनेगी स्वर्ग समान।
- मानव में देवत्व जगेगा, तब वसुधा पर स्वर्ग खिलेगा।
- करके मानव का निर्माण, चलो रचें नव राष्ट्र विधान।
- मिलकर गुरु संकल्प सजायें, युवा शक्ति को आगे लायें।
- गुरुसत्ता का है आहवान, मानव में जगे दैवीय विधान।

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -91001001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

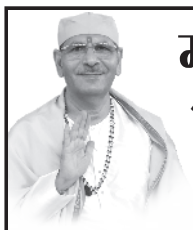

महर्षि वेदव्यास विद्यापीठ

आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला, नई दिल्ली-41

प्रवेश आमन्त्रित
सत्र 2026-27

पूज्यश्री सुधांशुजी महाराज के सान्निध्य में आनन्दधाम आश्रम, दिल्ली में स्थापित महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ में छठी (प्रथमा प्रथमवर्ष), सातवीं (प्रथमा द्वितीयवर्ष), आठवीं (प्रथमा तृतीयवर्ष), नवमी (पूर्वमध्यमा प्रथमवर्ष), ग्यारहवीं (प्राक् शास्त्री), शास्त्री प्रथमवर्ष एवं आचार्य प्रथमवर्ष (एम.ए.) कक्षाओं तक प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। इस वर्ष फॉर्म शुल्क 100/- रुपये है।

आवेदन-पत्र भरने की अन्तिम तिथि 18 मार्च, 2026 है तथा विद्यार्थी अपने अभिभावक के साथ दो फोटो, सत्यापित एवं मूल प्रमाणपत्रों सहित 24 मार्च, 2026 को प्रात: 08 बजे आश्रम में परीक्षा हेतु उपस्थित हों।

परिश्रमी एवं समर्पित विद्यार्थियों का संस्था में भविष्य उज्जवल है

चयन विधि : कक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर साक्षात्कार के लिए बुलाये गये विद्यार्थियों में से चयन - चयन समिति का निर्णय अन्तिम।

प्रवेश सम्बन्धी इस वर्ष गुरुकुल में प्रवेश के लिए दो व्यवस्थाएं हैं-

i. जो विद्यार्थी शिक्षा पूर्ण करने के बाद विश्व जागृति मिशन में ही सेवा करेंगे, उन्हें सभी सुविधाएं नि:शुल्क मिलेंगी, इसके लिए उन्हें बाण्ड भरना होगा।

ii. जो विद्यार्थी वर्ग एक (i) में इच्छुक नहीं, उन्हें शिक्षा समाप्ति तक प्रत्येक वर्ष मासिक 4000/- रुपये राशि गुरुकुल को देनी होगी।

सम्बद्धता : छठी से आठवीं तक श्री गोस्वामी गिरिधारीलाल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानम् एवं नवमीं से आचार्य तक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शिक्षा : सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ-साथ वेद, पुराण, गीता, संगीत, योग, कम्प्यूटर, कब्बडी एवं अन्य खेलों का प्रशिक्षण।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्री दौलतराम कटारिया (प्रधान) - 9312243623
डॉ. नरेन्द्र मदान (महामंत्री) - 8882051156
अन्य दूरभाष : 9716282446, 9313320224, 9958038081

आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-110041

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं-

"VISHWA JAGRITI MISSION" का A/c No. 916010029741912 Axis Bank, East Punjabi Bagh, New Delhi-110026, IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org व्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

अकोला (महाराष्ट्र) में चार दिवसीय भक्ति सत्संग सम्पन्न

बच्चों को उपहार ही नहीं अच्छे संस्कार दें - सुधांशु जी महाराज

अकोला। सनातन संस्कृति जागरण अभियान के तहत पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में महाराष्ट्र राज्य में स्थित विश्व जागृति मिशन अकोला मण्डल द्वारा श्री गोरक्षण संस्था प्रांगण में 19 से 22 फरवरी, 2026 तक चार दिवसीय विराट भक्ति सत्संग आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सत्संगप्रेमियों एवं गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा आप अपने सभी कार्यों को आनंदित होकर करें और अपनी कर्मठता, कार्यशैली और समर्पण से हार को भी जीत में बदलें। अपने बच्चों को उपहार के जगह पर अच्छे संस्कार दें और उन्हें धर्म से जोड़ें।

महाराजश्री ने आगे कहा कि इस संसार में हर वस्तु परिवर्तनशील है और जीवन का यही यथार्थ है। परिवर्तन को स्वीकार करने से मन परेशान नहीं होगा। आप अपने घर में साधु संन्यासियों की तरह जीवन जिएं तथा जिह्वा को मौन रखें, तो प्यार-परिवार में शांति बनी रहेगी। दान, दया और धर्म को अपने जीवन का अंग बनाएं। जिस घर में धर्म और गुरु कृपा है, वह परिवार सदैव खुश रहता है। हर पल कर्मरत रहकर जीवन में सुकून के लिए अपना ध्यान, धर्म, कर्म और कर्तव्य में लगाए रखें। हर दिन अपने भगवान और सद्गुरु के प्रति आभार व्यक्त करने की आदत बनाएं।

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में जहां भक्तों ने गुरुवर का सत्संग श्रवण कर स्वयं को धन्य किया वहीं सैकड़ों भक्तों ने मंत्र दीक्षा लेकर अपने जीवन को सुदिशा देने का संकल्प लिया। साथ ही 5 कुण्डीय वैभव लक्ष्मी यज्ञ में सैकड़ों भक्तों ने सहभागिता कर अपने घर-परिवार में मां वैभव लक्ष्मी से सुख-शांति और धन-समृद्धि का वरदान प्राप्त किया। पूज्य महाराज श्री ने यज्ञ में सर्वमंगल की कामना की।

सत्संग के इस कार्यक्रम में पूज्य महाराज श्री को सुनने के लिए भारी संख्या में भक्तों के साथ जाने-माने राजनेता, प्रबुद्धजन और समाजसेवी पधारे। अकोला मंडल के प्रधान, कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और कार्यकत्ताओं के सहयोग से यह चार दिवसीय भक्ति सत्संग अत्यंत सफल रहा। ●

खामगांव (महाराष्ट्र) में एक दिवसीय सत्संग सम्पन्न

संचार क्रांति के इस युग में भावी पीढ़ी को संस्कारित बनायें - सुधांशु जी महाराज

खामगांव। विश्व जागृति मिशन के खामगांव महाराष्ट्र मण्डल द्वारा डॉ बाबा साहेब आंबेडकर नगर परिषद मैदान में 23 फरवरी, 2026 को एक दिवसीय सनातन भक्ति सत्संग महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका श्रीगणेश आध्यात्मिक ज्ञान के ज्योति पुंज प्रभु सन्देश के संवाहक पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर उनका स्वागत एवं अभिनन्दन मिशन के वरिष्ठ अधिकारियों ने किया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा कि जो व्यक्ति हर पल अपने परमात्मा को धन्यवाद करता रहेगा वही जीवन में सुख समृद्धि और उन्नति प्राप्त करेगा। आपको चुनाव करना है कि परमात्मा के लिए शिकायती या धन्यवादी बनना है। हर समय दु:खी नहीं रहते हुए उस प्यारे ईश्वर को याद करें, कृपा अवश्य होगी। अपने बच्चों को संचार क्रान्ति की इस युग में संस्कार दें और उन्नत बनाएं। उन्होंने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपने माता व पिता को कभी भी निराश नहीं करने का संकल्प लें और उन्हें सम्मान दें। महाराजश्री ने आगे कहा कि अब युग आ गया है कि सभी सनातनियों को भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एकजुट होकर कार्य करना होगा।

कार्यक्रम का समापन नागरिक अभिनन्दन व महाआरती के साथ हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल के प्रधान, कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

मनाली (हिमाचल प्रदेश)

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं

डॉ. अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य में

चांद्रायण तप एवं ध्यान साधना शिविर

12 मई से 10 जून, 2026

- अर्द्ध चांद्रायण तप साधना — 12 से 26 मई, 2026
- चांद्रायण तप साधना (एडवांस कोर्स) — 27 से 10 जून, 2026
- पूर्ण चांद्रायण तप साधना — 12 मई से 10 जून, 2026
- प्रथम 5 दिवसीय ध्यान शिविर — 12 से 16 मई, 2026
- द्वितीय 5 दिवसीय ध्यान शिविर — 18 से 22 मई, 2026

पूर्णिमा दर्शन - 31 मई, 2026

आयोजकः विश्व जागृति मिशन, नई दिल्ली

पंजीकरण हेतु सम्पर्क करें: (+91) 9589938938, 9685938938, 9312284390, 8826891955

अमरावती (महाराष्ट्र) में एक दिवसीय सत्संग सम्पन्न

विश्व में शांति से बढ़कर कुछ नहीं, शांति के लिए परमात्मा से जुड़ें - सुधांशु जी महाराज

अमरावती। विश्व जागृति मिशन अमरावती मंडल द्वारा पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में 24 फरवरी, 2026 को अमरावती के सांस्कृतिक भवन में एक दिवसीय विराट भक्ति सत्संग का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भक्तों को सम्बोधित करते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा परमात्मा ने हमें सभी चीजें धन, दौलत, वस्तुएं दी है किन्तु एक ही वस्तु अपने पास रखी है और वह है शांति। विश्व में शांति से बढ़कर कुछ नहीं, शांति परमात्मा के चरणों में ही प्राप्त होगी। अत: अपने आप को अपनी बुद्धि को हर समय परमात्मा से जोड़ें।

महाराजश्री ने कहा कि झंझटो से छुटकारा पाने के लिए परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रयत्न जारी रखने चाहिए, किंतु मन को शांति रखना आवश्यक है। मन शांत है तो रचना होती है, निर्माण होता है। मन अशांत रहने पर विध्वंस होता है इसलिए हर हाल में मन की शांति को बनाये रखें।

इस कार्यक्रम में पूज्य महाराजश्री का सत्संग श्रवण कर आशीर्वाद पाने के लिए भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। सत्संग कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल के प्रधान जी के नेतृत्व में सभी पदाधिकारियों और कार्यकत्ताओं का सराहनीय योगदान रहा। ●

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान